# औरतों की आवाज़: विवेक की आवाज़

वीणा शिवपुरी

आज फिर हमारे देश में सांप्रदायिकता का ज़हर फैल रहा है। एक साथ देश के कई कोनों में दंगे भड़क उठे हैं। हज़ारों लोग मारे गए, घायल हुए। घर बरबाद हुए। औरतें-बच्चे लावारिस हो गए। लाखों रुपए की संपत्ति नष्ट हो गई। लोगों की रोज़ी-रोटी चली गई।

ऐसा लगता है कि आपस में लड़ते-मरते रहना मनुष्य का भाग्य है। इंसान जो अपने आपको इस धरती पर सबसे बुद्धिमान समझता है। चांद-तारों तक पहुंच गया है। लेकिन ज़मीन पर चैन और अमन से रहना नहीं सीख पाया। गली मुहल्लों के फ़सादों से लेकर देशों के आपसी युद्धों तक हिंसा का तांडव चल रहा है।

## हर बार वही कहानी

आज हमारे यहां मार-काट मंदिर-मस्जिद को लेकर है। हिंदू-मुसलमान दुश्मन बने हुए हैं। सन् '84 में नफरत हिंदू-सिखों के बीच थी। कारण उतना महत्वपूर्ण नहीं। क्योंकि कारण तो कुछ भी हो सकता है। जब मंदिर-मस्जिद का मसला नहीं था तब भी फ़िरकापरस्त झगड़े करवाते थे। कभी ताज़ियों के जुलूस को लेकर तो कभी किसी और बात पर। मैं यह नहीं मानती कि जब मंदिर-मस्जिद का मामला हल हो जाएगा तो शांति हो जाएगी। **जब तक स्वार्थी राजनीतिज्ञ और फ़िरकापरस्त लोग आम जनता को भड़काते रहेंगे, जब तक आम जनता उनके बहकावे में आती रहेगी, तब तक हिंसा का माहौल खत्म नहीं होगा।** मैं यह भी नहीं मानती कि अगर मुसलमान और सिख यहां नहीं रहेंगे तो झगड़ा नहीं होगा। तब हिंदू-हिंदू लड़ेंगे। वैष्णव और शैव सिर फ़ोड़ेंगे। दलितों और उच्च जाति में झगड़ा होगा। जो देश धर्म के आधार पर सरकारें चलाते हैं वहां भी दंगे होते हैं।

## बांटो और राज करो

लोगों को बांट कर अपना फ़ायदा करने की नीति न जाने कितनी पुरानी है। बांटने का आधार कुछ भी हो सकता है। चाहे वह धर्म हो, संप्रदाय हो, जाति, भाषा, नस्ल कुछ भी हो। ऐसे लोग

बहुत थोड़े होते हैं लेकिन बहुत अधिक लोगों को मूर्ख बनाने में सफल होते हैं।

जब गली मुहल्लों में जाकर बात करो तो सब कहते हैं हमें अपने पड़ौसी से कोई डर नहीं। जब ग़रीब तबके से पूछो तो कहते हैं हमें अपनी रोज़ी रोटी की फ़िक्र है। फिर कौन है ये लाखों लोग जो अपना घर-बार, काम-धाम छोड़ कर अयोध्या जा पहुंचे? किसी अच्छे काम के लिए लोगों को फुरसत नहीं मिलती लेकिन यहां लोग दूर-दूर से चल कर पहुंचे मस्जिद को तहस-नहस करने के लिए। ये लोग भी तो हमारे आपके जैसे हैं। किसी गली मुहल्ले से आए हैं। किसी के पड़ौसी, हमदर्द और दोस्त हैं। फिर कौन सी ताक़त है जो इन्हें इंसानों से हैवान बना देती है। इनसे सोचने व समझने की ताक़त छीन लेती है। ये अपना भला-बुरा भूल कर बार-बार उसी षड्यंत्र के जाल में फंस जाते हैं।

हर साल या दो साल में सारे देश में किसी न किसी मुद्दे को लेकर नफ़रत और हिंसा की लहर दौड़ जाती है। हज़ारों प्राणों, घरों और संपत्ति की बलि लेकर आग कुछ ठंडी पड़ती है। फिर कुछ समय बाद किसी और बात को लेकर वही तूफ़ान उठ खड़ा होता है। आखिर कब तक?

कब तक इंसान इसी तरह एक दूसरे के खून का प्यासा रहेगा? कब तक कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए लोगों की जानों से खेलते रहेंगे?

## सांप्रदायिकता की चक्की में पिसी औरतें

आज गली-मुहल्लों की नेतागिरी से लेकर देशों की सरकारें तक मर्दों के हाथों में हैं। भले-बुरे की निर्णयशक्ति भी उन्हीं के हाथों में है। दुनिया को बारूद के ढेर पर ला बैठाने की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं की है। लेकिन हिंसा की इस अंधी दौड़ का नतीजा औरतों को भी भुगतना पड़ता है। लूटपाट, आगज़नी और हत्या में उनके घर खत्म हो जाते हैं। बरसों की मेहनत से बनाई-बसाई गृहस्थी मिनटों में खाक हो जाती है। मर्दों की बदले की आग में दोनों संम्प्रदायों की औरतों की इज्ज़त जलती है।

यह तूफ़ान गुज़र जाने के बाद टूटे-फूटे घरों को फिर से बसाने का बोझ भी औरतों के कंधों पर ही पड़ता है। ज़िंदा बचे हुए बूढ़ों और बच्चों का पेट पालने की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं की होती है। आज ज़रूरत है कि औरतें एकजुट हो कर अपने गांव, गली-मुहल्लों से लेकर दिल्ली की संसद तक शांति और अमन की मांग करें। अपनी आवाज़ में आधी आबादी की ताक़त पैदा करें। भाईचारे की बात करने वाले और लोगों को भी नेतृत्व दें।

**हमारी जाति है इंसान**
**हमारा धर्म है इंसानियत**
**यही है औरतों की आवाज़**
**यही है विवेक की आवाज़** □